ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 7, Issue 11, November 2020

महादेवी वर्मा का काव्य चिंतन

Dr. Savita Tak

Assistant Professor, Hindi, M.L.V. Government College, Bhilwara, Rajasthan, India

सार

महादेवी वर्मा छायावाद की एक प्रतिनिधि हस्ताक्षर हैं। छायावाद का युग उथल-पुथल का युग था। राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक आदि सभी स्तरों पर विभ्रम, द्वंद्व, संघर्ष और आंदोलन इस युग की विशेषता थी। इस पृष्ठभूमि में, अन्य संवेदनशील कवियों के समान ही, महादेवी ने भी अपनी रचनाशीलता का उपयोग किया। महादेवी अपनी काव्य रचनाओं में प्रायः अंतर्मुखी रही है। अपनी व्यथा, वेदना और रहस्य भावना को ही इन्होंने मुखरित किया है। उनकी कविता का मुख्य स्वर आध्यात्मिकता ही अधिक दिखाई देता है यद्यपि उनकी गद्य रचनाओं में उनका उदार और सामाजिक व्यक्तित्व काफी मुखर है। हम यह कह सकते हैं कि महादेवी वर्मा का काव्य प्रासाद इन चार स्तम्भों पर अवस्थित है - वेदनानुभूति, रहस्य भावना, प्रणयभावना और सौंदर्यानुभूति यदि हम यह कहे कि महादेवी वर्मा के काव्य का मूल भाव प्रणय है तो यह अतिश्योक्ति नही होगी, उनकी कविताओं में उदात प्रोम का व्यापक चित्रण मिलता है। अलौकिक प्रिय के प्रति प्रणय की भावना, नारी सुलभ संकोच और व्यक्तिगत तथा आध्यात्मिक विरह की अनुभूति उनके प्रणय के विविध आयाम हैं। महादेवी के काव्य में सौंदर्य के विविध रूपों का मनोहर चित्रण हुआ है। उनकी सौंदर्यानुभूति विलक्षण है। महादेवी वर्मा सौंदर्य को सत्य की प्राप्ति का साधन मानती है। छायावादी कवि चतुष्टय में महादेवी वर्मा का महत्वपूर्ण स्थान है। शब्द दो प्रकार के होते हैं वाचक शब्द और प्रतीकात्मक। वाचक शब्दों का संबंध केवल अभिधा शक्ति से होता है। जबकि प्रतीकात्मक शब्दों का संबंध लक्षणा और व्यंजना से होता है। साहित्य मनीषी वैदिक साहित्य और उपनिषद् काल की रचनाओं मं प्रतीकों की उपस्थिति बताते हैं। इसके अतिरिक्त महाभारत, पुराण, नागपंथी हठयोगियों की बानियों, अमीर खुसरों की मुकेरियों तथा विद्यापति सूर, कबीर, निराला और प्रसाद तक में प्रतीकों का प्रयोग देखने को मिलता है।

महादेवी के आकार प्रतीक को एक सिद्ध शिल्पी मिला। महादेवी ने माया के लिए दर्पण और आत्मा के लिए दीपक जैसे प्रकृति प्रेमी होने के कारण अपने प्रतीक भी प्रकृति से उठाती है। उन्होंने प्रकृति के प्रत्येक उपकरण, प्रत्येक उपादान, प्रत्येक व्यापार में उस विराट सत्ता के दर्शन किए हैं रहस्य तथा प्रणय के संकेतों से भरकर प्रकृति उनके समक्ष प्रस्तुत होती है।

परिचय

महादेवी वर्मा (२६ मार्च 1907 — 11 सितम्बर 1987) हिन्दी भाषा की कवयित्री थीं। वे हिन्दी साहित्य में छायावादी युग के चार प्रमुख स्तम्भों[क] में से एक मानी जाती हैं।[1] आधुनिक हिन्दी की सबसे सशक्त कवयित्रियों में से एक होने के कारण उन्हें आधुनिक मीरा के नाम से भी जाना जाता है।[2] कवि निराला ने उन्हें “हिन्दी के विशाल मन्दिर की सरस्वती” भी कहा है।[ख] महादेवी ने स्वतन्त्रता के पहले का भारत भी देखा और उसके बाद का भी। वे उन कवियों में से एक हैं जिन्होंने व्यापक समाज में काम करते हुए भारत के भीतर विद्यमान हाहाकार, रुदन को देखा, परखा और करुण होकर अन्धकार को दूर करने वाली दृष्टि देने की कोशिश की।[3] न केवल उनका काव्य बल्कि उनके सामाजसुधार के कार्य और महिलाओं के प्रति चेतना भावना भी इस दृष्टि से प्रभावित रहे। उन्होंने मन की पीड़ा को इतने स्नेह और शृंगार से सजाया कि दीपशिखा में वह जन-जन की पीड़ा के रूप में स्थापित हुई और उसने केवल पाठकों को ही नहीं समीक्षकों को भी गहराई तक प्रभावित किया।**उन्होंने खड़ी बोली हिन्दी की कविता में उस कोमल शब्दावली का विकास किया जो अभी तक केवल बृजभाषा में ही संभव मानी जाती थी। इसके लिए उन्होंने अपने समय के अनुकूल संस्कृत और बांग्ला के कोमल शब्दों को चुनकर हिन्दी का जामा पहनाया। संगीत की जानकार होने के कारण उनके गीतों का नाद-सौंदर्य और पैनी उक्तियों की व्यंजना शैली अन्यत्र दुर्लभ है।** उन्होंने अध्यापन से अपने कार्यजीवन की शुरूआत की और अन्तिम समय तक वे प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्या बनी रहीं। उनका बाल-विवाह हुआ परन्तु उन्होंने अविवाहित की भाँति जीवन-यापन

किया। प्रतिभावान कवयित्री और गद्य लेखिका महादेवी वर्मा साहित्य और संगीत में निपुण होने के साथ-साथ[4] कुशल चित्रकार और सृजनात्मक अनुवादक भी थीं। उन्हें हिन्दी साहित्य के सभी महत्त्वपूर्ण पुरस्कार प्राप्त करने का गौरव प्राप्त है। भारत के साहित्य आकाश में महादेवी वर्मा का नाम ध्रुव तारे की भाँति प्रकाशमान है। गत शताब्दी की सर्वाधिक लोकप्रिय महिला साहित्यकार के रूप में वे जीवन भर पूजनीय बनी रहीं। वे पशु पक्षी प्रेमी थी गाय उनको अति प्रिय थी , वर्ष 2007 उनका जन्म शताब्दी के रूप में मनाया गया। 27 अप्रैल 1982 को भारतीय साहित्य में अतुलनीय योगदान के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से इन्हें सम्मानित किया गया था। गूगल ने इस दिवस की याद में वर्ष 2018 में गूगल डूडल के माध्यम से मनाया । [3]

महादेवी वर्मा का जन्म 1907 ई. में उत्तर प्रदेश के जनपद फर्रूखाबाद में एक सुशिक्षित मध्यवर्गीय परिवार में हुआ था। पिता श्री गोविन्द प्रसाद एम.ए.एल.एल.बी. की उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद मुख्याध्यापक के रूप में कार्यरत थे और माता हेमरानी देवी भी शिक्षित और धार्मिक विचारों वाली कुशल गृहिणी थी। अपनी आरंभिक शिक्षा इन्होंने घर पर ही पूरी की। अध्ययन के साथ ही संगीत और चित्रकला में भी इनकी प्रारंभ में ही रुचि रही है। नौ वर्ष की अल्पायु में ही इनका विवाह भी रूपनारायण वर्मा से हुआ। फलस्वरूप इंदौर से वे अपने ससुराल प्रयाग में आ गई। वहीं पर इन्होंने मिडिल से लेकर एम.ए. संस्कृत तक की औपचारिक शिक्षा प्राप्त की। अपनी शैक्षणिक योग्यता के कारण एम.ए. पास करते ही प्रयाग महिला विद्यापीठ के प्राचार्य का पद मिला। इन्होंने अपने दायित्व का सफलतापूर्वक निर्वाह किया। असमय वैधव्य जीवन ने महादेवी को आत्मलीन, शांत और एकांकी अवश्य बनाया लेकिन इनका बहिर्मुखी व्यक्तित्व अत्यंत उदार, मिलनसार और परहित विशेष रूप से दीन-दुखियों की सेवा-सहायता की भावना से ओतप्रोत था। [6] 'श्रृंखला की कड़िया' शीर्षक निबंध संग्रह 'अतीत के चलचित्र' और 'स्मृति की रेखाएं' जैसे संस्मरणों और रेखाचित्रों में इनके बहिर्मुखी व्यक्तित्व की अत्यंत जीवंत अभिव्यक्ति हुई है। लेकिन इनकी कविताओं में वेदना, करूणा और अकेलेपन की आत्मशीलता ही अधिक व्यक्त हुई है। इस तथ्य को ध्यान में रखकर ही महादेवी के काव्य का मूल्यांकन करना उचित होगा।

महादेवी ने मोटे तौर पर दो प्रकार के प्रतीकों का प्रयोग किया है। एक, आत्मिक प्रतीक, जो उनके आध्यात्मिक सौंदर्य बोध को स्पष्ट करते हैं और इनसे महादेवी के दार्शनिक दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति होती है और दो प्रेमपरक प्रतीक जो कवयित्री के मानसिक सौंदर्य बोध को प्रकट करते हैं।

काव्य - नीहार, रश्मि, नीरजा, संध्यागीत, गीतपर्व, दीपशीखा, रघिनी, परिक्रमा, नीलांबरा, आत्मिक और दीपगीत आदि।
रेखाचित्र और संस्करण - श्रृंखला की कड़िया तथा अतीत के चलचित्र आदि।
अनुवाद - सप्तपर्णा (वेदों से लेकर गीत गोविन्द तक के महत्वपूर्ण और सुंदर अंशों का संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद)
महादेवी के काव्य में दुःख और करूणा का भाव प्रधान है। वेदना के विभिन्न रूपों की उपस्थिति उनके काव्य की एक प्रमुख विशेषता है। वह यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं करती कि वह 'नीर भरी दुख की बदली है।' वस्तुतः समूचा छायावादी काव्य ही व्यक्तिवाद का प्रभाव लेकर चला और वहां आत्माभिव्यक्ति को सहज ही स्थान मिला। 1900 से 1920 ई. की खड़ी बोली की कविता में कवि में अपने राग-विराग की प्रधानता हो गई। विषय अपने आप में कैसा है यह मुख्य बात नही थी बल्कि मुख्य बात यह रह गई थी कि कवि के चित के राग-विराग में अनुरंजित होने के बाद वह कैसा दिखता है। विषय इसमें गौण हो गया विषयी प्रधान। जहां तक महादेवी वर्मा का प्रश्न है। उनकी वेदना के उद्गम के बारे में निश्चित तौर पर कुछ कहना संभव नहीं है।[6]

उन्हें प्रशासनिक, अर्धप्रशासनिक और व्यक्तिगत सभी संस्थाओँ से पुरस्कार व सम्मान मिले।

- 1943 में उन्हें 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' एवं 'भारत भारती' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद 1952 में वे उत्तर प्रदेश विधान परिषद की सदस्या मनोनीत की गयीं। 1956 में भारत सरकार ने उनकी साहित्यिक सेवा के लिये 'पद्म भूषण' की उपाधि दी। 1971 में साहित्य अकादमी की सदस्यता ग्रहण करने वाली वे पहली महिला थीं। 1988 में उन्हें मरणोपरांत भारत सरकार की पद्म विभूषण उपाधि से सम्मानित किया गया।

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 7, Issue 11, November 2020

- सन 1969 में विक्रम विश्वविद्यालय, 1977 में कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल, 1980 में दिल्ली विश्वविद्यालय तथा 1984 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी ने उन्हें डी.लिट की उपाधि से सम्मानित किया।
- **इससे पूर्व महादेवी वर्मा को 'नीरजा' के लिये 1934 में 'सक्सेरिया पुरस्कार', 1942 में 'स्मृति की रेखाएँ' के लिये 'द्विवेदी पदक' प्राप्त हुए। 'यामा' नामक काव्य संकलन के लिये उन्हें भारत का सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ। वे भारत की 50 सबसे यशस्वी महिलाओं में भी शामिल हैं।**
- 1968 में सुप्रसिद्ध भारतीय फ़िल्मकार मृणाल सेन ने उनके संस्मरण 'वह चीनी भाई' पर एक बांग्ला फ़िल्म का निर्माण किया था जिसका नाम था नील आकाशेर नीचे।[5]
- 16 सितंबर 1991 को भारत सरकार के डाकतार विभाग ने जयशंकर प्रसाद के साथ उनके सम्मान में 2 रुपये का एक युगल टिकट भी जारी किया है[4]

उनके एक गीत की पंक्ति है -

शलभ मैं शापमय वर हूँ
किसी का दीप निष्ठूर हूँ

उनके पूरे काव्य पटल पर इस तरह के असंख्य बिम्ब बिखरे पड़े हैं। एक विचित्र-सा सूनापन, एक विलक्षण एकांकीपन बार-बार उनकी कविताओं में उमड़ता दिखाई देता है। अल्पायु में ही विवाहित होने के बाद, उन्होंने स्वेच्छा से एकांत जीवन का चयन किया। उनके जीवन में जो एकांकीपन था वह किसी अभाव की देन था। पीड़ा का साम्राज्य ही उनके काव्य संसार की सौगात है - साम्राज्य मुझे दे डाला, उस चितवन ने पीड़ा का।

यह पीड़ा की कवयित्री का प्रारंभ है -

"मेरी मदिरा मधुवाली
आकर सारी ढुलका दी
हंस कर पीड़ा से भर दी
छोटी जीवन की प्याली

किंतु महादेवी की वेदना नितांत वैयक्तिक भी नही है। स्वयं उन्होंने अपने जीवन में दुख और अभाव की बात से इंकार किया। वस्तुतः उनके वेदना-भाव का प्रासाद दो आधार-भूमियों पर टिका है - आध्यात्मिक भावभूमि तथा मानवतावादी भावभूमि। बौद्ध धर्म के अध्ययन और उनके प्रति उनके रूझान ने भी महादेवी के वेदना-भाव के लिए आध्यात्मिक भावभूमि तैयार की। जब व्यक्ति वेदना के अनुभव से गुजरता है और उसकी तीव्रता के दंश सहता है तो वह पराई पीर को उसी धरातल पर खड़े होकर समझ सकता है।[3] यहीं से उनमें समग्र मानव जाति के दुखों के प्रति सहानुभूति और करूणा के भाव जन्म लेते हैं। मानव मात्र के प्रति करूणा का प्रत्यक्षीकरण महादेवी के गद्य लेखन में देखा जा सकता है। पद्य के क्षेत्र में सांध्यगीत और 'दीपशिखा' तक आते-आते उनकी वेदना का मानव मात्र के प्रति करूणा का रूप लेते देखा जा सकता है। इस दृष्टि से दीपशिखा महादेवी की अनुपम कृति है। कवयित्री की चिंता केवल मनुष्य नहीं वरन पक्षियों के प्रति भी प्रकट होती है।

पथ न भूले एक पग भी
घर न खोए लघु विहंग भी
स्निग्ध लौं की तूलिका से
आंक सबकी छाह उज्ज्वल

यह एक विलक्षण बात है कि महादेवी के काव्य लोग में, वेदना की परिणति आनंद में होती है। कवयित्री दुख और पीड़ा के बोझ तले घुट-घुटकर सिसकती नहीं अपितु निरंतर बढ़ते हुए आनंद भाव की ओर उन्मुख होती है। वह आनंद की ऐसी अवस्था में पहुंच जाती है जहां 'नयन त्रवणमय श्रवण नयनमय हो जाता है। वेदना की धारा प्रवाहित होकर अंततः आनंद के सागर में ही जा मिलती है। यहां तक कि मृत्यु को भी महादेवी वर्मा अंत अथवा दुखद नहीं मानती उनकी दृष्टि में हो "अमरत है जीवन का हास "[5]

मृत्यु जीवन का चरम विकास"

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 7, Issue 11, November 2020

मृत्यु तो नियति है जो आनंद के ही सौ द्वार खोल दे।

विचार-विमर्श

जब छायावादी कवियों की और उनमें भी विशेषकर महादेवी वर्मा की बात आती है तो रहस्यवाद की चर्चा अनिवार्य हो जाती है। हम ऊपर यह निवेदन कर चुके हैं कि छायावाद का युग उथल-पुथल संक्रमण और लगभग प्रत्येक स्तर का संघर्ष और विभ्रम का युग था। एक अर्थ में द्वंद्व इस काल का प्रधान गुण था और मिथ का द्वंद्व भी, वर्तमान और अतीत का द्वंद्व था तो वास्तिवकता और अध्यात्म का द्वंद्व था। इस अंतिम द्वंद्व ने विशेष रूप से छायावादी रचनाकार को रहस्यवाद की ओर मोड़ दिया। महादेवी के संदर्भ में कुछ आलोचक व्यक्तिगत एकांकीपन और अभाव को भी रहस्यानुभूति का कारण मानते हैं जो भी, हो महादेवी और रहस्यवाद एक-दूसरे के पर्याय बन गए हैं।
महादेवी वर्मा की रहस्य भावना की विवेचना में रहस्यवाद के पारंपरिक अर्थ को समझने का प्रयास करें।[4]
चिंतन के क्षेत्र में जो अद्वैतवाद है, भावना के क्षेत्र में वही रहस्यवाद है।
व्यष्टि सौंदर्य-दृष्टि छायावाद है और समष्टि सौंदर्य दृष्टि रहस्यवाद।
रहस्यवाद जीवात्मा की उस अंतर्निहित प्रवृति का प्रकाशन है, जिसमें वह दिव्य और अलौकिक शक्ति से अपना शान्त और निश्छल संबंध जोड़ना चाहती है और यह संबंध यहां तक बढ़ जाता है कि दोनों में कोई अंतर नही रह जाता।
काव्य में आत्मा की मूल अनुभूति की मुख्य धारा रहस्यवाद है।
महादेवी वर्मा की कविताओं में रहस्यानुभूति की उपस्थिति का आंकलन करें तो भी यही प्रमाणित होता है कि वह सर्वत्र और प्रत्येक उपादान तथा प्रकृति-व्यापार में एक विराट सत्ता के दर्शन होते हैं वह उसके साथ तादात्म्य, साक्षात्कार को व्याकुल दिखाई देती है। यहीं से उनके काव्य में रहस्य की सृष्टि होती है।[3] वह स्वयं को प्रकृति का ही अंग मानकर उस दिव्य सत्ता से मिलन को तत्पर रहती है। महादेवी का मूर्त और अमूर्त जगत एक-दूसरे से इस प्रकार मिले हुए हैं कि एक यथार्थवादी दूसरे को रहस्यदृष्टा बनकर ही पूर्णता पाता है उनका नारी होना इस रहस्यवाद को और भी गहन करता है वे एक रागात्मक संबंध स्थापित करती है। उस परम पुरुष के साथ जब असीम से हो जाएगा मेरी लघु सीमा का मेल यही आत्म समर्पण उनका पावन लक्ष्य है। महादेवी वर्मा की रहस्यानुभूति पर यदि हम सतर्क दृष्टिपात करें तो हम देखेंगे कि उनके काव्य में रहस्यवाद के सभी चरणों की अभिव्यंजना हुई है। उनमें कौतुहल और जिज्ञासा रहस्यानुभूति का सबसे पहला चरण होता है। मानव किसी चकित शिशु-सा जब ब्रहाण्ड के विराट लीला व्यापार को देखता है तो वह बस चकित होकर रह जाता है और जब उसकी बुद्धि कोई भी व्याखय प्रस्तुत नही कर पाती तो वह रहस्य में डूब जाता है किस शिल्पी ने अनजान/विश्व प्रतिमा कर दी निर्माण' महादेवी भी चकित हो सोचती है और प्रश्न करती है - प्रथम प्रणय की सुषमा सा। यह कलियों की चितवन में कौन? चकित मानव को हर ओर एक परम सत्ता के ही दर्शन होते हैं और वह उनकी एक झलक पाने को आतुर रहता है। महादेवी वर्मा ने भी प्रकृति के विविध उपादानों में इस औकिक प्रियतम को ही देखा है और इन्हीं को देखकर उसके अपार सौंदर्य की कल्पना की। चितवन तन श्याम रंग। इन्द्रधनुष भृकुटि भग, विद्युत का अंग रांग दीपित मृदु-मृदु अंग-अंग। उड़ता नभ में अछोर। तेरा नव नील चीर महादेवी वर्मा एक रहस्यवादी कवि के रूप में केवल अद्वैतवाद से बंध कर नहीं चलती। वह प्रियतम के साथ एकाकार तो हो जाना चाहती है[6] - तुम मुझमें प्रिय। फिर परिचय क्या। चित्रित तू मैं हूँ रेखा क्रम। जब छायावादी रहस्यवाद की बात करते है तो हम उसकी युगीन विशेषताओं को अनदेखा नही कर सकते। विभिन्न स्तरो पर पराधीनता की बेडियों में जकड़े समाज के लिए यह मोटे तौर पर मुक्ति-संघर्ष का युग था दो विश्वयुद्धों के मध्यांतर का यह काल राष्ट्रीय चेतना के उत्कर्ष का काल है। छायावाद का युग महात्मा गांधी की सक्रियता, किसान, आंदोलन, प्रथम विश्व युद्धोत्तर स्थितियों, विश्व व्यापी आर्थिक संकट, श्रमिक हड़तालों, विद्रोही तेवर आदि का काल था।[2]

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 7, Issue 11, November 2020

छायावादी कवियों के समान महादेवी वर्मा प्रकृति की अनन्य प्रेमी है। इस विषय पर यह कहना प्रासंगिक होता है कि प्रकृति के विभिन्न उपकरणों के माध्यम से महादेवी ने विविध मनोभावों, राग-विराग को पूर्ण अभिव्यक्ति दी है। प्रकृति में वह उस विराट सत्ता के दर्शन करती है।

आध्यात्मिक प्रतीक - यहां परम पुरुष के आगमन का सहारा लेकर कवयित्री ने आध्यात्मिक प्रतीक की रचना की।

करूणामय को भाता है।
तम के परदों में आना।

साधनात्मक प्रतीक - महादेवी का संपूर्ण जीवन एक सतत साधना के रूप में उनके काव्य पटल पर चित्रित हुआ है। इन्होंने ऐसे प्रतीकों का अत्यंत सुन्दर प्रयोग किया है तथा साधना व श्रद्धा को।

परम्परागत प्रतीक - महादेवी वर्मा ने अपनी कविताओं में परम्परागत और सांस्कृतिक प्रतीकों का भी खूब प्रयोग किया है।

सौंदर्यपरक प्रतीक - महादेवी वर्मा सौंदर्य की उदभाविका है। छायावादी कवियों के समान महादेवी ने भी सौंदर्य को अपने काव्य में प्रधानता दी है। उन्होंने सर्वत्र उस चीर सौंदर्य के दर्शन किए हैं। प्रकृति के नारी रूप का अत्यधिक प्रयोग उनके काव्य में मिलता है।

वेदना प्रधान प्रतीक - महादेवी वर्मा की कविता का मूल स्वर वेदना होने के कारण उसमें वेदना प्रधान प्रतीकों की कोई कमी नही है। अपनी वेदना को व्यक्त करने के लिए वह विभिन्न प्रतीकों को माध्यम बनाती है। कभी वह कहती है - विरह का जलजात जीवन, कभी नीर भरी दुख की बदली।

भावनात्मक प्रतीक - भावनात्मक सौंदर्य के लिए कवयित्री भावनात्मक प्रतीकों का प्रयोग करती है। गीत की विशेषता यही होती है कि उसमें किसी एक अनुभूति को लेकर ही चला जाता है।[1]

आलोचनात्मक प्रतीक - प्रकृति के अंदर एक चेतन सत्ता की उपस्थिति का ज्ञान महादेवी को इस क्षेत्र के लिए अधिक मुखर करता है। एक उदाहरण -

सिंधु को क्या परिचय दें देव
क्षुद्र है मेरे बुंद बुंद प्राण
तुम्हीं में सृष्टि, तुम्हीं में नाश।

परिणाम

प्रणय की अनुभूति में छायावादी कविता को महत्वपूर्ण स्थान मिला है। छायावाद का काव्य भारतीय नारी के नवोत्थान का काव्य था, जब वह समाज में बराबरी का दर्जा पाने के लिए संघर्ष कर रही थी, अपने पारम्परिक रूढ़िगत बंधनों को तोड़ने का यत्न कर रही थी और पुरुष की व्यावहारिक सहचरी बनने की दिशा में अग्रसर हो रही थी। उधर पुरुष को भी यह लगने लगा था कि स्त्री को उसके विशुद्ध रूप में समझा जाना चाहिए। स्त्री-पुरुष संबंध इस यंग में अपने लिए नए आयामों की खोज करता दिखाई देता है। महादेवी वर्मा के काव्य में प्रेम एक मूल भाव के रूप में प्रकट हुआ है उनका प्रेम अशरीरी है। यह करूणा से आप्लावित प्रेम है अलौकिक दिव्य सता के प्रति उनकी इस प्रणयानुभूति में दाम्पत्य प्रेम की झलक भी मिलत है और लौकिक स्पर्श का आभास भी। महादेवी की कविता में व्यक्त प्रेम इसलिए भी विशिष्ट है क्योंकि वह एक स्त्री की लेखनी से किया गया स्त्री-मनोभावों का चित्रण है। उनमें स्त्रयोचित्त लाज-संकोच है तो अपने युग की नवजागृत नारी का अहं भी है वह विरह की भाग में तपती है तो संयोग की छांह से भी स्वयं को दूर नहीं रखना चाहती। इस प्रकार उन्होंने प्रणय की विविध स्थितियों का भरपूर आनंद लेते हुए अपनी कविताओं में इनका गहन चित्रण किया है। उनकी कविता का मूल भाव है। उन्होंने प्रेम के मधुर रूप का चयन किया क्योंकि माधुर्य को वह प्रेम को महत्वपूर्ण गुण मानती है। हृदय के अनेक रागात्मक संबंधों में माधुर्यमूलक प्रेम ही उस सामंजस्य तक पहुंच सकता है जो सब रेखाओं में रंग भर सके; सब रूपों को सजीवता दे सके और आत्म निवेदन को इष्ट के साथ समता के धरात पर खड़ा कर सके। यहां छायावादी साहचर्य का भाव द्रष्टव्य है।[2]

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 7, Issue 11, November 2020

महादेवी ने प्रकृति के उपकरणों में जिस सौंदर्य के दर्शन किए, उसी से उनका प्रणयानुभूति का उदभव हुआ और इसी विराट सौंदर्य के प्रति वह अपने प्रणयोद्गार व्यक्त करती रही। सौंदर्य तो प्रेम का प्रेरक होता है। फिर अपार, अथाह, असीम सौंदर्य किससे हृदय का प्रणय से उद्वेलित नहीं कर देगा। महादेवी में अपने इस आलौकिक प्रिय से मिलने की तीव्र इच्छा है वह कहती है -

जो तुम आ जाते एक बार
कितनी करूणा, कितने संदेश
पथ में बिछ जाते वन पराग
गाता प्राणों का तार
अनुराग भरा उन्माद राग
आंसू लेते वे पद पखार

इस प्रकार प्रणय के अनेकानेक मनोभावों के चित्रण उनकी कविताओं में भरे पड़े हैं वहां स्त्री सुलभ लाज संकोच के भी दर्शन होते हैं - सरल तेरा मृदु हास अकारण यह शैशव का हास। बन गया कब कैसे चुपचाप लाज-भीनी सी मृदु मुस्कान। नारी के छायावाद युगीन अभिमानी रूप की अभिव्यंजना भी मिलती है। “कब दिवस की अग्निशर
मेरी सजलता बंध पाया
तारकों ने मुकुट बन
दिग्भ्रान्त कब मुझको बनाया
ले गगन का दर्प रज में उतार सहज निखर चली मैं

महादेवी ने दिव्य विराट पुरुष को अपना ईष्ट मान कर उसके साथ माधुर्यमूलक रागात्मक संबंध की स्थापना की। इसलिए उनकी प्रेमानुभूति और रहस्यानुभूति दोनों एक दूसरे में रच-बस गई। यह रागात्मक संबंध इतनी गहनता और प्रगाढ़ता लेकर उपस्थित होता है कि उसमें दाम्पत्य प्रेम का संकेत मिलता है जो स्वयं में प्रणय की पूर्णता का ही द्योतक है।

साहित्य में महादेवी वर्मा का आविर्भाव उस समय हुआ जब खड़ीबोली का आकार परिष्कृत हो रहा था। उन्होंने हिन्दी कविता को बृजभाषा की कोमलता दी, छंदों के नये दौर को गीतों का भंडार दिया और भारतीय दर्शन को वेदना की हार्दिक स्वीकृति दी। इस प्रकार उन्होंने भाषा साहित्य और दर्शन तीनों क्षेत्रों में ऐसा महत्त्वपूर्ण काम किया जिसने आनेवाली एक पूरी पीढ़ी को प्रभावित किया। शचीरानी गुर्टू ने भी उनकी कविता को सुसज्जित भाषा का अनुपम उदाहरण माना है। उन्होंने अपने गीतों की रचना शैली और भाषा में अनोखी लय और सरलता भरी है, साथ ही प्रतीकों और बिंबों का ऐसा सुंदर और स्वाभाविक प्रयोग किया है जो पाठक के मन में चित्र सा खींच देता है।[ज] छायावादी काव्य की समृद्धि में उनका योगदान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।[3] छायावादी काव्य को जहाँ प्रसाद ने प्रकृतितत्त्व दिया, निराला ने उसमें मुक्तछंद की अवतारणा की और पंत ने उसे सुकोमल कला प्रदान की वहाँ छायावाद के कलेवर में प्राण-प्रतिष्ठा करने का गौरव महादेवी जी को ही प्राप्त है। भावात्मकता एवं अनुभूति की गहनता उनके काव्य की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता है। हृदय की सूक्ष्मातिसूक्ष्म भाव-हिलोरों का ऐसा सजीव और मूर्त अभिव्यंजन ही छायावादी कवियों में उन्हें 'महादेवी' बनाता है।वे हिन्दी बोलने वालों में अपने भाषणों के लिए सम्मान के साथ याद की जाती हैं। उनके भाषण जन सामान्य के प्रति संवेदना और सच्चाई के प्रति दृढ़ता से परिपूर्ण होते थे। वे दिल्ली में १९८३ में आयोजित तीसरे विश्व हिन्दी सम्मेलन के समापन समारोह की मुख्य अतिथि थीं। इस अवसर पर दिये गये उनके भाषण में उनके इस गुण को देखा जा सकता है।

यद्यपि महादेवी ने कोई उपन्यास, कहानी या नाटक नहीं लिखा तो भी उनके लेख, निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, भूमिकाओं और ललित निबंधों में जो गद्य लिखा है वह श्रेष्ठतम गद्य का उत्कृष्ट उदाहरण है।[झ] उसमें जीवन का सम्पूर्ण वैविध्य समाया है। बिना कल्पना और काव्यरूपों का सहारा लिए कोई रचनाकार गद्य में कितना कुछ अर्जित कर सकता है, यह महादेवी को पढ़कर ही जाना जा सकता है। उनके गद्य में वैचारिक परिपक्वता इतनी है कि वह आज भी प्रासंगिक है। समाज सुधार और नारी स्वतंत्रता से संबंधित उनके विचारों में दृढ़ता और विकास का अनुपम सामंजस्य मिलता है। सामाजिक जीवन की गहरी परतों को छूने वाली इतनी तीव्र दृष्टि, नारी जीवन के वैषम्य और शोषण को तीखेपन से आंकने वाली इतनी जागरूक प्रतिभा और निम्न वर्ग के निरीह, साधनहीन प्राणियों के अनूठे चित्र उन्होंने ही पहली बार हिंदी साहित्य को दिये।

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 7, Issue 11, November 2020

मौलिक रचनाकार के अलावा उनका एक रूप सृजनात्मक अनुवादक का भी है जिसके दर्शन उनकी अनुवाद-कृत 'सप्तपर्णा' (१९६०) में होते हैं। अपनी सांस्कृतिक चेतना के सहारे उन्होंने वेद, रामायण, थेरगाथा तथा अश्वघोष, कालिदास, भवभूति एवं जयदेव की कृतियों से तादात्म्य स्थापित करके ३९ चयनित महत्वपूर्ण अंशों का हिन्दी काव्यानुवाद इस कृति में प्रस्तुत किया है। आरम्भ में ६१ पृष्ठीय 'अपनी बात' में उन्होंने भारतीय मनीषा और साहित्य की इस अमूल्य धरोहर के सम्बंध में गहन शोधपूर्ण विमर्ष किया है जो केवल स्त्री-लेखन को ही नहीं हिंदी के समग्र चिंतनपरक और ललित लेखन को समृद्ध करता है।

निष्कर्ष

सौंदर्य भावना छायावाद की एक महत्वपूर्ण प्रवृति है। महादेवी ने न केवल इसे अंगीकार किया अपितु अपने काव्य में इसे महत्वपूर्ण चिताकर्षक रूपाकार देकर समाहित भी किया। उन्होंने सौंदर्य के सूक्ष्म रूप को प्रतिष्ठित और चित्रित किया। उनकी सौंदर्य दृष्टि प्रकृति और मानव दोनों की ओर आकृष्ट होती है।[4]

'सौंदर्य की उदभाविका' महादेवी वर्मा सौंदर्य की अदभूत चितेरी है। उन्होंने अखिल ब्रहाण्ड में सौंदर्य के दर्शन किए हैं और इस अनुभूति से गुजरते हुए उन्होंने इसके विविध रूपों का चित्रांकन अपनी लेखनी से किया। उनका काव्य सौंदर्य की खान है और उनके गीतों में सौंदर्य के विविध रूपों की छवियां बिखरी पड़ी हैं। महादेवी वर्मा के काव्य में प्राप्त उस विराट सत्ता, प्रकृति और नारी के सौंदर्य पर ही दृष्टिपात करेंगे।

महादेवी ने सर्वत्र एक विराट सत्त के दर्शन किए हैं। इसी अरूप पुरुष का दिव्य सौंदर्य उन्हें आकृष्ट करता है और वे उसी के चिर-सौंदर्य से प्रभावित होकर उसका गुणगान करती है। यह सौंदर्य उन्हें प्रकृति के प्रत्येक उपकरण, प्रत्येक उपादान में दिखाई देता है। इसलिए प्रकृति की सुषमा का वर्णन उनके संदर्भ में एक परम प्रिय के सौंदर्य का वर्णन है। महादेवी की सौंदर्यानुभूति में रहस्यात्मकता की उपस्थिति दिखाई पड़ती ही है। छायावाद का जन्म जिन कारणों से हुआ उनमें एक प्रमुख कारण यह था कि छायावादी दृष्टि ने मनुष्य और प्रकृति के बीच औद्योगिक-व्यावसायिक प्रगति को छायावाद ने प्रकृति पर मनुष्य की विजय घोषित करने का विरोध किया। प्रकृति के प्रति छायावादी दृष्टि 'कौतुहल और रागात्मकता' से भरी रही। स्वयं महादेवी कहती है - छायावाद ने मनुष्य के हृदय और प्रकृति के उस संबंध में प्राण डाल दिए जो प्राचीन काल से बिम्ब-प्रतिबिम्ब में चला आ रहा था और जिसके कारण मनुष्य को अपने दुख में प्रकृति उदास और सुख में पुलकित जान पड़ती थी। छायावाद की प्रकृति घट, कूप आदि में भरे जल की एकरूपता के समान अनेक रूपों में प्रकट एक महाप्राण बन गई। अब मनुष्य के अश्रु, मेघ के जलकण और पृथ्वी के ओस बिंदुओं का एक ही कारण, एक ही मूल्य है। प्रकृति के लघु तृण और महान वृक्ष, कोमल कलियां और कठोर शिलाएं अस्थिर जल और स्थिर पर्वत, निविड अंधकार और उज्ज्वल विद्युत रेखा, मानव की लघुता-विशालता, कोमलता-कठोरता, चंचलता-निश्चलता और मोह-ज्ञान का केवल प्रतिबिम्ब न होकर एक ही विराट से उत्पन्न सहोदर है। महादेवी क्योंकि प्रकृति के समस्त उपकरणों समस्त व्यापारों में उस दिव्य सौंदर्य के ही दर्शन करती है, इसलिए उन्होने प्रकृति के सभी उपादानों, सभी रूपों का चित्रण अपनी कविताओं में किया है। यहां हम कुछ उदाहरण देंगे -

धीरे-धीरे उतर क्षितिज से। आ वसन्त रजनी तारकमय नव वेणी-बंधन।
शीशफूल कर शशि का नूतन रश्मि वलय, सित धन अवगुठन।
मुक्ताहल अभिराम बिछा दे चितवन से अपनी ....

महादेवी क्योंकि प्रकृति के प्रत्येक उपकरण, प्रत्येक रूप में उस दिव्य पुरुष के सौंदर्य के ही दर्शन करती है। इसलिए प्रकृति का कोई भी रूप उन्हे विचलित नही करता। उन्ही के अनुसार प्रकृति का शांत रूप जैसे मेरे हृदय में एक चंचल लय सी भर देता है। उसका रौद्र रूप वैसे ही आत्मा को प्रशासंत स्थिरता देता है। अस्थिरता रौद्रता की प्रतिक्रिया ही संभवतः मेरी एकाग्रता का कारण रहती है। निकट आंधी, तूफान, बादल, समुद्र आदि कुछ ऐसे विषय हैं जिनके चित्र अनायास बनते हैं और बना लेने पर स्थायी आनंद प्राप्त होता है। महादेवी ने अपनी व्यक्तिगत प्रणयानुभूति और वेदनाभूति की अभिव्यक्ति के लिए भी प्रकृति का सहारा लिया। जो कुछ वह सीधे-सीधे अप्रत्यक्ष रूप में नही कह

सकती थी, प्रकृति का अवरण ले लेने पर वही सब कुछ वह अतयंत सहज सरल ढंग से कह जाती है।[5]

महादेवी वर्मा तथा छायावादी कवियों के प्रकृति चित्रण की एक अनूठी विशेषता यह रही कि उन्हेंने प्रकृति पर नारी रूप का आरोप किया। वह चाहे प्रसाद हो, सुमित्रानंदन पंत का आरोपण किया। वह चाहे प्रसाद हो, सुमित्रानंदन पंत या फिर निराला - सभी प्रकृति की सुंदरता में किसी स्त्री स्वरूप की कल्पना से बढ़कर और कौन सी कल्पना होगी। महादेवी वर्मा भी इसका अपवाद नही है। बल्कि छायावाद युग में स्त्री की नव प्राप्त छवि और स्वतंत्रता से पे्ररित होकर, स्वयं स्त्री होने के नाते महादेवी ने नारी मुक्ति की चेतना को कही अधिक सुंदर ढंग से व्यक्त किया है। महादेवी सौंदर्य की उदभाविता है। उनके काव्य में दिव्य पुरुष, प्रकृति, नारी के माध्यम से सौंदर्य को अभिव्यक्ति मिलती है। उनकी कविताओं में चित्रित सौंदर्य स्थूल न होकर सूक्ष्म और आंतरिक सौंदर्य है।

आधुनिक गीत काव्य में महादेवी जी का स्थान सर्वोपरि है। उनकी कविता में प्रेम की पीर और भावों की तीव्रता वर्तमान होने के कारण भाव, भाषा और संगीत की जैसी त्रिवेणी उनके गीतों में प्रवाहित होती है वैसी अन्यत्र दुर्लभ है। महादेवी के गीतों की वेदना, प्रणयानुभूति, करुणा और रहस्यवाद काव्यानुरागियों को आकर्षित करते हैं। पर इन रचनाओं की विरोधी आलोचनाएँ सामान्य पाठक को दिग्भ्रमित करती हैं। आलोचकों का एक वर्ग वह है, जो यह मानकर चलते हैं कि महादेवी का काव्य नितान्त वैयक्तिक है। उनकी पीड़ा, वेदना, करुणा, कृत्रिम और बनावटी है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल जैसे मूर्धन्य आलोचकों ने उनकी वेदना और अनुभूतियों की सच्चाई पर प्रश्न चिह्न लगाया है - दूसरी ओर आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी जैसे समीक्षक उनके काव्य को समष्टि परक मानते हैं.

शोमेर ने 'दीप' (नीहार), मधुर मधुर मेरे दीपक जल (नीरजा) और मोम सा तन गल चुका है कविताओं को उद्‌धृत करते हुए निष्कर्ष निकाला है कि ये कविताएं महादेवी के 'आत्मभक्षी दीप' अभिप्राय को ही व्याख्यायित नहीं करतीं बल्कि उनकी कविता की सामान्य मुद्रा और बुनावट का प्रतिनिधि रूप भी मानी जा सकती हैं।

सत्यप्रकाश मिश्र छायावाद से संबंधित उनकी शास्त्र मीमांसा के विषय में कहते हैं — "महादेवी ने वैदुष्य युक्त तार्किकता और उदाहरणों के द्वारा छायावाद और रहस्यवाद के वस्तु शिल्प की पूर्ववर्ती काव्य से भिन्नता तथा विशिष्टता ही नहीं बतायी, यह भी बताया कि वह किन अर्थों में मानवीय संवेदन के बदलाव और अभिव्यक्ति के नयेपन का काव्य है। उन्होंने किसी पर भाव साम्य, भावोपहरण आदि का आरोप नहीं लगाया केवल छायावाद के स्वभाव, चरित्र, स्वरूप और विशिष्टता का वर्णन किया।"

प्रभाकर श्रोत्रिय जैसे मनीषी का मानना है कि जो लोग उन्हें पीड़ा और निराशा की कवयित्री मानते हैं वे यह नहीं जानते कि उस पीड़ा में कितनी आग है जो जीवन के सत्य को उजागर करती है.

यह सच है कि महादेवी का काव्य संसार छायावाद की परिधि में आता है, पर उनके काव्य को उनके युग से एकदम असम्पृक्त करके देखना, उनके साथ अन्याय करना होगा। महादेवी एक सजग रचनाकार हैं। बंगाल के अकाल के समय १९४३ में इन्होंने एक काव्य संकलन प्रकाशित किया था और बंगाल से सम्बंधित "बंग भू शत वंदना" नामक कविता भी लिखी थी। इसी प्रकार चीन के आक्रमण के प्रतिवाद में हिमालय नामक काव्य संग्रह का सम्पादन किया था। यह संकलन उनके युगबोध का प्रमाण है।

गद्य साहित्य के क्षेत्र में भी उन्होंने कम काम नहीं किया। उनका आलोचना साहित्य उनके काव्य की भांति ही महत्वपूर्ण है। उनके संस्मरण भारतीय जीवन के संस्मरण चित्र हैं।

उन्होंने चित्रकला का काम अधिक नहीं किया फिर भी जलरंगों में 'वॉश' शैली से बनाए गए उनके चित्र धुंधले रंगों और लयपूर्ण रेखाओं का कारण कला के सुंदर नमूने समझे जाते हैं। उन्होंने रेखाचित्र भी बनाए हैं। दाहिनी ओर करीन शोमर की क़िताब के मुखपृष्ठ पर महादेवी द्वारा बनाया गया रेखाचित्र ही रखा गया है। उनके अपने कविता संग्रहों यामा और दीपशिखा में उनके रंगीन चित्रों और रेखांकनों को देखा जा सकता है।[6]

संदर्भ

1. छायावादी काव्य तथा छायावादोत्तर काव्य, पृष्ठ 5
2. आधुनिक काव्य विवेचन मानविकी विद्यापीठ, पृष्ठ 117
3. छायावाद की दार्शनिक पृष्ठभूमि, सुषमा पॉल
4. महादेवी का काव्य में लालित्य विधान, डॉ. मनोरमा शर्मा साहित्य संस्थान, कानपुर, प्र० सं० 1976
5. छायावाद का काव्य शिल्प, प्रतिमा कृष्ण बल राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली 1971
6. आधुनिक हिन्दी कविता, डॉ. नंद किशोर नवल